07 / 12 / 79 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

सर्व रिश्तो को समाप्त कर फरिश्तापन की अनुभूति करना

➢➢ मैं संगमयुगी ब्राह्मण आत्मा हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा ब्रह्मामुख वंशावली हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा ब्राह्मण कुलभूषण हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा पदमापदम सौभाग्यशाली हूं

→ कोटों मे कोई और कोई मे से भी कोई हूं

→ डायरेक्ट परमात्मा की संतान हूं

→ ईश्वरीय कुल की हूं

◆ ये ईश्वरीय कुल संगमयुग पर ही है

● वाह मेरा भाग्य वाह

➳ _ ➳ संगमयुग वरदानी युग है

→ स्वयं भाग्य विधाता वरदाता

→ वरदानो से मेरी झोली भर रहे है

→ वरदानो से भरपूर होकर

→ असम्भव को सम्भव कर रही हूं

◆ वरदानों की शक्ति से सम्पन्न होकर

● विश्व परिवर्तन का कार्य कर रही हूं

➢➢ रुहानी नशे मे रहना

➳ _ ➳ मैं आत्मा श्रेष्ठ हीरो पार्टधारी हूं

→ ऊंच ते ऊंच, श्रेष्ठ ते श्रेष्ठ

→ आलमाइटी अथॉरिटी बाप की संतान हूं

◆ कितना ऊंचा व श्रेष्ठ पार्ट है !

● वाह संगमयुग वाह

◆ कल्प कल्प के लिए भाग्य बना रही हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा शिव शक्ति हूं

→ बापदादा के साथ कम्बाइंड हूं

→ कम्बाइंड रह शक्तिशाली अनुभव कर रही हूं

→ श्रेष्ठ स्वमान की सीट पर सेट हो

◆ श्रेष्ठ स्वरुप

◆ श्रेष्ठ स्थिति

◆ ऊंच स्थिति मे रहते

● अतीन्द्रिय सुख के झूले मे झूलती रहती हूं

➢➢ फरिश्तापन की सीट पर सेट होने का अनुभव

➳ _ ➳ मैं और मेरा बाबा इस मग्न अवस्था मे

→ सम्मुख बाबा को निहारती

→ शक्तिशाली किरणों रुपी बांहों मे समाती

→ बिल्कुल हल्का अनुभव करती

→ जैसे पांव धरती पर नही

→ देह व देह के सर्व रिश्तो से

◆ न्यारी और बाबा की प्यारी

→ फरिश्ता बन उड चली

◆ बापदादा का हाथ पकड

→ फरिश्तो की दुनिया में

→ बस एक की ही याद

→ मैं बाबा की बाबा मेरा

◆ अभुल बन रही हूं

◆ स्मृति स्वरुप बन रही हूं

● विस्मृति के संस्कार समाप्त

→ देह व देह के विनाशी रिश्तो में

→ कोई लगाव झुकाव नही

→ एक बाप की याद मे लवलीन

→ बेहद की वैरागी बन रही हूं

➳ _ ➳ सेफ्टी का साधन - याद की भट्टी

→ मै आत्मा याद की यात्रा मे हूं

→ बाबा की याद मे रहने से हर परिस्थिति को

→ सहज पार करती हूं

→ साक्षी होकर देखती हूं

◆ क्यों क्या के प्रश्नों से दूर रहती हूं

◆ सदा सेफ रहती हूं

➳ _ ➳ मैं आत्मा डबल लाइट हूं

→ पुरानी देह मे रहते

→ देह के भान से न्यारी

◆ सदा हल्की

◆ ऊंची स्थिति में

● फ़रिश्तापन की स्थिति का अनुभव करती

→ कोई बंधन नही

→ कोई भी रिश्ता नही

→ देह से भी रिश्ता नही

→ निमित मात्र कर्म के लिए

→ इस शरीर का आधार ले

→ सभी बोझ से हल्की

→ उपराम स्थिति

◆ फरिश्ता जीवन की अनुभूति कर रही हूं